26/8/22

पत्रावली पेश हुई। वादी अथवा वादीगण की ओर से कोई हाजिर नहीं आया। बार-बार आवाज लगवाई गई। बावजूद आवाज के भी कोई हाजिर नहीं आया। वाद वादी हस्ब हाजरी अदम पैरवी के खारिज किया जाता है। पत्रावली फैसल शुमार होकर नम्बर से कम हो दाखिल दफ्तर हो।